JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'मैत्रेयी' उपन्यास में स्त्री चेतना

मंजू नामदेव (षोधार्थी)
डॉ. सरोज गुप्ता (निर्देषिका)
हिन्दी अध्ययन षाला एवं षोध केन्द्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विष्वविद्यालय छतरपुर, मध्यप्रदेष 471001

शीर्षकः–''इस कथानक की मैत्रेयी स्वंय से पूछ सकती है– उसे क्यों आवष्यक है आत्म साक्षात्कार के अनेक युगों के पष्चात स्त्री–पुरुष की त्रिकोणीय परिधि में प्रस्तुत होना और यदि वह एक अर्थ में अनजान रही तो अनेक नाम और रूपों में लगातार प्रकट भी तो थी! इसलिए उसे एक युग और काल की ही विषिष्ट पहचान क्यों आवष्यक है?

''वह यह अच्छी तरह से जानती है कि इस प्रकार उसके सार्वजनिक हो जाने पर उसे स्वयं से इन दुरूह प्रष्नों को पूछना ही होगा। अब उसे अपने आपकों शास्त्रार्थियों की सभा की विषय–वस्तु के रूप में भी प्रस्तुत करना होगा और इसमें यदि वह व्यंग्य, विनोद और उपहास का भी पात्र बनती है, तो यह उसकी नियति है। आज जनक की ज्ञान–सभा में खुली हुई केष राषि, आवेगपूर्ण मूखमण्डल और गहन जीवनानुभव की बोझिल वाणी से शास्त्रार्थ को उद्यत मैत्रेयी पुनः एक चुनौती है, किसी याज्ञवल्क्य को ही नहीं बल्कि स्वयं और समाज को भी।''

प्रस्तावनाः– कलम के धनी और वेदों का ज्ञान रखने वाले पंड़ित प्रभुदयाल मिश्र जी द्वारा लिखा उपन्यास 'मैत्रेयी' एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में हमारे सामने आता है 'वैदिक पद्धति पर लिखा एक रोचक और सराहनीय कार्य है।

'मैत्रेयी' उपन्यास इनका श्रेष्ठ उपन्यास साहित्य की पराकाष्ठा पर खरा उतरता है इसमें उपनिषदों का षिल्प कथा संवाद के रूप में है इन कथाओं का ओर छोर पाना प्रायः आसान नहीं होता है। इस उपन्यास में अध्यात्म और दर्षन भी बहुत गहराई से दिखाया गया है। मिश्र जी देष–विदेष में वेद विद्या की अखण्ड ज्योति का प्रकाष फैलाते एक पवित्र अनुष्ठान में संकल्परत है। यह हम सभी के सौभाग्य का विषय है कि वेदों की रहस्यमय मंत्र वाणी को वे अपने गल्प काव्य प्रतिभा के माध्यम से जन साधारण तक सहज सरल भाषा में पहुंचा रहे है।

उपन्यास 'मैत्रेयी' में महर्षि याज्ञवल्क्य और उनकी दो पत्नियों की कथा है। महर्षि याज्ञवल्क्य महर्षि वैषम्पायन के भान्जे थे। पहले उनके आश्रम में ही रहते थे। बाद में उन्होंने अपना आश्रम स्थापित किया था। महर्षि की दो पत्नि थी–मैत्रेयी और कात्यायनी । महर्षि याज्ञवल्क्य के अधिकार में प्रभूत भौतिक सम्पत्ति थी और उससे भी अधिक अमूल्य ज्ञान–गरिमा के स्वामी थे मैत्रेयी ने महर्षि से ब्रह्म–ज्ञान प्राप्त किया था। कात्यायनी को ज्ञान प्राप्त करने में कोई रूचि नहीं थी वह भौतिक सम्पत्ति की स्वामिनी होना चाहती थी। वे दोनों मनुष्य की विरोधी प्रवृत्तियों की प्रतीक थी। इस बात को मिश्र जी ने अपने उपन्यास 'मैत्रेयी' में उभारा है। याज्ञवल्क्य उस दर्षन के प्रखर प्रवक्ता थे। जिसमें इस संसार को मिथ्या स्वीकारते हुए भी उसे पूरी तरह नकारा नहीं। उन्होने व्यवहारिक धरातल पर संसार की सत्ता को स्वीकार किया। एक दिन याज्ञवल्क्य को लगा कि अब उन्हें ग्रहस्थ आश्रम छोड़कर वानप्रस्थ के लिए चले जाना चाहिए। इसलिए उन्होने दोनों पत्नियों के सामने अपनी सम्पत्ति को बराबर हिस्से में बांटने का प्रस्ताव रखा। कात्यायनी ने पति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया पर मैत्रेयी वेहद शान्त स्वभाव की थी। अध्ययन चिन्तन और शास्त्रार्थ में उनकी रूचि गहरी दिलस्पी थी। वह जानती थी कि धन–सम्पत्ति से आव्य ज्ञान नहीं खरीदा जा सकता। इसलिए उन्होने पति की सम्पत्ति लेने से इंकार करते हुए कहा कि में भी वन में जाऊंगी और आप के साथ मिलकर ज्ञान और अमरत्व की खोज करा करूगी इस तरह कात्यायनी को ऋषि की सारी संम्पत्ति मिल गई और मैत्रेयी अपने पति की विचार–संपदा की स्वामिनी बन गई।

''वृहदारण्यकोपनिषद में याज्ञवल्क्य का यह सिद्धांत प्रति पादित है कि ब्रह्म ही सर्वोपरी तत्व है और अमृत्व उस अक्षर ब्रह्म का स्वरूप है। इस विद्या का उपदेष याज्ञवल्क्य ने अपनी मैत्रेयी नामक प्रतिभा शालिनी पत्नी को दिया है। शरीर त्यागने पर आत्मा की गति की व्याख्या याज्ञवल्क्य ने जनक से की।''

लेखक ने याज्ञवल्क्य की पत्नी कात्यायनी और मैत्रेयी दोनों स्त्री पात्रों का सूक्ष्म दृष्टि से उपन्यास में चित्रांकन किया है। दोनों ही स्त्री अपने में पूर्ण है, कात्यायनी को वेद विद्या में उतनी रूचि नहीं है मगर गृहस्थ जीवन से उसे जैसे प्रेम सा हो गया है वह महर्षि याज्ञवल्क्य के कार्य को पूर्ण करने में सक्षम है। ऋषि कात्यायन की स्नेही पुत्री कात्यायनी अल्प समय में ही माता के दुलार से वंचित। उनके पिता ने यद्यपि द्विगुणित स्नेह दिया। उनके आश्रम में आये अतिथि ऋषिवषिष्ठ और मुनि व अत्रि पधारे। वषिष्ठ की पत्नी अरन्धती और अत्रि की पत्नी अनुसूया ने कुछ दिन तक आश्रम में ही रहकर कात्यायनी का भरपूर स्नेंह दिया उसके बाल मन पर दोनों ऋषि पत्नियों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और मन मस्तिष्क में बहुत से प्रष्न खडे हो गये। कात्यायनी के बाल मस्तिष्क की दुविधा बढ़ने में परम मनस्थिनी अनुसूया को देर नहीं लगी।

''वास्तव मैं प्रत्येक वक्ता, कथाकार या कलाधर्मी अपनी कृति में मूल तो केवल एक साधन के रूप में हीं प्रयोग में ला रहा है उसका वास्तविक ध्येय तो इसके माध्यम से अपने व्यक्तित्व का प्रक्षेपण है और ज्यादा सही अर्थों में अपनी आकांक्षाओं, आदर्षो और विचार का छायांकन है। इस तरह से बना व्यक्तित्व या कथानक यद्यपि वायवीय होता है।''[1]

कात्यायनी फिर अनुसूया से प्रष्न करती है कि सभी कुछ स्त्री जाति का दायित्व बनता है पुरूष का नहीं? तो थोड़े विराम के बाद अनुसूया बताते हुए कहती है कि–

''स्त्री का सतीत्व पति सेवा का कलाभिनय अथवा पति के दुर्गणों और दुष्प्रवृत्तियों का प्रतिरक्षण नहीं है। यह प्रष्न तुम्हारे मन में उठ सकता है कि समान क्षमताओं और संभावनाओं से युक्त, स्त्री और पुरूष में एक प्रधान और दूसरा गौण कैसे हो सकता है? इनमें स्वामी और परपोषिता का भी भाव कहां स्थान रखता है? अतः एक स्त्री द्वारा एक पुरूष के प्रति किया गया सम्पूर्ण समर्पण अथवा अपने व्यक्तित्व का हनन सतीत्व नहीं हैं। सतीत्व स्त्री की एक सकारात्मक शक्ति है। यह एक स्त्री द्वारा अपने प्रकृत व्यक्तित्व में किया गया एक आरोहण है।''[2]

अनुसूया जी ने थोड़ी देर ठहरकर कहा कि मेरे कथन का बेटी यह अर्थ न निकालना कि –

''मैं स्त्री और पुरूष में किसी प्रतियोगी भाव का समर्थन कर रही हूँ वास्तव मै में यदि वे एक– दूसरे को परास्त करने में ही अपनी ऊर्जा लगा देते है तो इससे किसी का भी कोई कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा।''[3]

स्त्री का अपने अस्तित्व व अपनी सत्ता के लिए सचेत होना स्त्री चेतना है। स्त्री पात्र अपने अस्तित्व के लिए जाग्रत है ये सब समझाते हुए बहुत ही गहराई से अपने विचारों को कात्यायनी के समक्ष रखती है हुई वास्तविक ज्ञान की पहचान कराती है।

''वास्तविक सतीत्व एक स्त्री का आदर्ष या मर्यादा नहीं, उसकी पहचान है। उसमें स्थित सार्वकालिक सत् की उसकी सामान्य स्थिति ही है। अतः लोक में बहुख्यात मेरा महासतीत्व मेरी कोई चेष्ठा या कुषलता नही है। और वास्तविक अर्थ में इस ख्याति में महर्षि अत्रि का भी समान योग है।''[4]

कात्यायनी थोड़ी रूककर सोचती है कि पिता के आश्रम में जो भी कार्य रहता है वह सब कात्यायनी ही करती गौषाला, भोजनषाला, अतिथिगृह सबकी व्यवस्था उसकी ही देखनी पढ़ती थी ये सब करते हुए जैसे – ''कि यौवन के भार ने उसे कब आक्रान्त कर दिया है, कात्यायनी को स्वंय भी पता न रहा। हाँ, अब ऋषि की दृष्टि बोझिलता उसे अपने आपके प्रति अधिक सचेत अवष्य करने लगी थी।''[5]

कत्यायनी के मन में बहुत सवाल चलते रहते है वह सोचती है कि –''विचित्र है नारी जीवन। एक घर, परिवार, एक ममत्व–भरे वातावरण से सहसा कैसे कट जाना होता है उसे एक कातर वर्तमान से आषंकित भविष्य की यह पीढ़ी उसी की नियति है? फिर इन देवतुल्य ऋषि पिता को वह किसके भरोसे छोडेगी?''

उसके ऊपर सामाजिक दायित्व इतना है कि वह सोचती है कि सब कुछ पुरूष संग, समाज के कैसे बंधन में उसे डालते है उसे अपने से ज्यादा अपने परिवार, देष, समाज, की फिक्र रहती है। आज भी स्त्रियों में स्वाभिमान तथा आत्मसमर्पण की भावना ही प्रमुख है आज उसे अपने अधिकारों की चिंता है क्योंकि वह षिक्षित है कर्मठ, लगनषील अपनी प्रतिभा विष्व में अपना गौरव बढाने वाली स्त्री चेतना है।

''सुना है, स्त्री का सुख और परिपूर्णता उसका पुरूष–संग है किन्तु जो पुरूष बिना स्त्री के तथा जो स्त्रियाँ पुरूष विहीन है, वह देखकर समझकर ऐसा तो नहीं लगता कि वे किसी अपूर्णता में है और इतना तो जीवन मैने जिया है। वह मैं अपूर्ण, अपृप्त और असार्थक कैसे मान लूँ।''[6]

कात्यायनी सामाजिक परिपेक्ष से समाज में एक सकारात्मक ऊर्जा जागने वाली स्त्री पात्र है वह पुरूष को प्रत्येक्ष मै चुनौती देती है और स्वयं अपनी षक्ति का परिक्षण करती है क्या गलत, क्या सही है वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व और अपनी पहचान बनाना चाहती है वह किसी के पराधीन नहीं रहना चाहती है। उसके अन्दर निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता है स्वतंत्र रहकर सामाजिक दायित्वों को निभाना चाहती है उसे एक परिवार छोड़कर दूसरे परिवार में जाना होता है वह प्रेम से भरे पूरे परिवार को पल भर में ही उसे त्यागना पड़ता है। इस समाज के लिए अपने भविष्य के लिए।

''वाचक्नवी मैत्रेयी गार्गी गर्ग गोत्रीय ऋषि वचक्नु की बेटी मैत्रेयी वाक्पटु मेधावी और तेजतप्त। वचक्नु ने अपने पुत्र बालाकि गार्ग्य और पुत्री गार्गी (मैत्रेयी) को समस्त संचित ज्ञान और विज्ञान तो प्रदान किया ही है उन्होंने अपने युग के श्रेष्ठ मनीषियों सिद्धों तथा राजर्षियों से उनका सुदीर्घ सत्संग भी कराया है।''

मैत्रेयी शैषवावस्था से ही विलक्षण प्रतिभा वह अपने प्रति बहुत ही ईमानदार और सजग स्त्री पात्र है वो शक्ति जिसे करूणा और प्रेम की प्रतिमूर्ति कहा जाता है। वह पराधीन रहने वाली स्त्री पात्रों में से नहीं है, वह आत्मनिर्भर रहने वाली स्त्री है वह स्वाधीन रहकर कार्य करनें में सक्षम है।

''मैत्रेयी जैसे ही बड़ी होती जाती है उसमें बौद्धिक क्षमता बढ़ती जाती है। आक्रामक स्वर और असहिष्णु संवाद उसके समवयस्कों को उससे दूर ही छिटकाते है।'' ''अनेक अवसर पर मैत्रेयी के आक्रामक तेवर उसके अग्रन और पिता को उद्विग्न भी कर देते थे, उसके द्वारा बड़े–बड़े ऋषियों को कभी नामतः सम्बोधित करने पर विद्वत समाज ने आपत्ति भी की थी। किन्तु मैत्रेयी को इसकी चितां नही थी। वह जानती थी कि यहां दोष केवल उसकी वय का है, सामर्थ्य का नहीं तथा यह कि इस धरातल पर उसे कोई परास्त नही कर सकता था।''

मैत्रेयी अपने शांत सरोवर में डूबी सोचती है क्या स्त्री षुरू से ही ईष्वर ने उसे मुक्त किया है बंधन में बांधा है–

''सर्वथा असीम और अनन्त ब्रह्य इतना असीम कैसे हो सकता है– मैत्रेयी सोचती है। निर्गुण–निराकार में इतने गुण और धर्म कहां से, कैसे आ सकते है?

'पर कृष्ण तो कर्षण करता ही है, अपने नाम से भी और रूप से भी। पता नहीं वह बंधन देता है या मुक्ति–आकर्षण का बन्धन या निजत्व की छूट?

''कितना विचित्र है? एकान्त, निजता, मुक्ति नहीं है। इसके लिए द्वैत का आकर्षण बन्धन जरूरी है। जैसे यदि बन्धन न होता तो मुक्ति की बात कहाँ से उठती? यदि मुक्ति एक भाव या स्थिति शुन्यता है तो उसकी पृष्ठभूमि में भाव और स्थिति का अनुमान तो होता ही है।''

मैत्रेयी कहाँ है– बन्धन या मुक्ति में? वह चाहती क्या है– बंधन या मुक्ति? मुक्ति! किससे? क्या उसने बन्धन स्वीकार किये है? क्या सचमुच ही स्वाकार्य है उसे ये?

मैत्रेयी के पिता वचक्नु ने उसे समझाया था–'सोडकामयत द्वितीयों में आत्मा जायेतेति।'

''उसने कामना की कि मेरा दूसरा शरीर उत्पन्न हो। दूसरा षरीर कौन–सा–स्त्री का? क्यों?

क्या वह मूल्यतः पुरूष ही है? तब क्या स्त्री एक उपोत्पत्ति मात्र है?

स्वभावतः भगवान विष्णु ने सोचा–उनके अन्तर्गत के प्रष्न का उत्तर देने वाला कौन है–स्त्री, पुरूष अथवा नपुंसक? विष्णु को क्या उत्तर मिला ? एक षिषु के प्रष्न का क्या उत्तर है? मां ही न?

''पुरूष भी यदि संप्रष्न है तो स्त्री ही तो उसका उत्तर है। जब तक वह संप्रष्न नहीं, उसकी स्त्री या पुरूषात्मकता सत्ता तो अप्रकट ही है न?

मैत्रेयी के अध्ययन और षोध की पराकाष्ठा इसी में है। वह उत्तर बन सकती है। वह उत्तर ही तो है सारी प्रष्नावलियों का।''

मैत्रेयी के पिता मैत्रेयी के लिए बहुत चिंचित रहते है कि काष उसकी मां होती तो षायद वह इस संबंध के बारे में कुछ अधिक जान पाती, पर विधाता ने तो कुछ और ही सोच रखा है उसके लिए–

''उसे इसमें अकेले रहते हुए अपनी आत्मरक्षा भी करनी है, और सही मार्ग का चुनाव कर अपनी लक्ष्य सिद्धि के साथ–साथ सारी नारी जाति के लिए उपयुक्त पथ भी प्रषस्त करना है।''

क्या बड़े–बड़े ज्ञानी पुरूष और साधु मैत्रेयी के कुछ प्रष्न पूछने या षास्त्रोंल्लेख करने पर उसकी आखों के भीतर कहीं और गहरे उतरना चाहते है? षायद वे यह अनुमान ही नहीं कर पाते है कि एक स्त्रीमूर्ति से इतना दुष्कर संदर्भ उद्‌भूत भी हो सकता है। या फिर उनका ध्यान उसकी संदर्भ उद्‌भूत भी हो सकता है। या फिर उनका ध्यान उसकी बुद्धि और मस्तिष्क की ओर न जाकर कहीं उसकी देह में ही भिद जाना चाहता है। संभवतः इसी से वे उसकी बात का तत्काल कोई सीधा–सा उत्तर नहीं दे पाते है क्या उनके लिए नारी देह ही है, मन नहीं, मस्तिष्क नहीं, बुद्धि नहीं?

''षायद नारी ने भी सदा से इसी अध्यारोपित नियति को अंगीकर कर लिया है, इसलिए उसने अपनी रूप सज्जा में ही अपने अस्तित्व की सारवत्ता को समेट लिया है। किसी में यदि विचार और बुद्धि का एक स्तर भी रहा है तो उसने उसका उपयोग एक पुरूष की छाया बन जाने के आत्मानुषासन में ही किया है। अनुसूया, अरून्धती, मदालसा या देवहूति अपनी बौद्धिक क्षमताओं और आत्मज्ञान के क्षेत्र में किसी तपः पूत पुरूष से कहाँ कम थी, किन्तु उनके अस्तित्व की सिद्धि जैसे उनके महासतीत्व में ही सिमट कर रह गई है।''

विषाल सभामण्डल में बैठे समस्त ऋषि और उनकी पत्नियाँ सभी के लिए वह अकेली चुनौती है। सभी ऋषि पत्नियां कठोर दृष्टि से देखती है तुम्हें अकेले ही संघर्ष की राह तेह करना है अपनी मंजिल खुद ही गढ़नी होगी इस प्रकार मैत्रेयी खुद षक्ति धारा में जैसे बहती चली जा रही है। और आगे वह सोचती है–

''क्या इन सब परास्त और तिरोहित नारी मूर्तियों की भांति मैत्रेयी भी अपूर्ण है? क्या नारी मात्र ही अपूर्ण है? और क्या पुरूष सचमुच ही पूर्ण है?

यह मिथ्या है, यह मिथ्या है, मैत्रेयी ने मन ही पूरी षक्ति से कहा। एक निर्गुण, निराकार, निरवयव और उपाधि रहित ईष्वर की दृष्टि में ऐसा पक्षपात नहीं हो सकता। यह अच्छा ही है कि इस पुरूषप्रधान समाज की चुनौती के रूप में मैं यहाँ स्थित हूँ। अब तक स्त्री ने पुरूष के प्रति यदि समर्पण किया है तो यह उसकी प्रकृति, प्रवृत्ति और धर्म हो सकता है। इसे उसकी अषक्तता कैसे माना जा सकता है? किन्तु बिडम्बना यह है कि स्वंय नारी भी इसे अपनी नियति मानकर अब तक पुरूष वर्ग से छली जाती है। यह सब जानते हुए, पहचानते हुए कैसे भुलावे में आ सकती है।''

इस प्रकार उपन्यास के माध्यम से लेखक ने स्त्री चेतना को सामाजिक परिवेष में प्रस्तुत करते हुए स्त्रियों का अपने अधिकारों के लिए सजग रहने की प्रेरणा दी है। मैत्रेयी स्वच्छंद स्त्री पात्रों में से एक है, उसके अन्दर स्वतंत्र व्यक्तित्व की सत्ता स्थापित करने की छटपटाहट है। वह हर कार्य के लिए तत्पर रहती है, समाज से हमेषा लड़ती रही है, अपने आत्मसम्मान के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहती है, अस्तित्व, अस्मिता, सम्मान के प्रष्न नये नहीं है किन्तु उनकी अनुगूंज अभी तक नयी है। नारी ने अपने पक्ष में खुद खड़ा होना सीखा है। नयी परिस्थितियों में पूराने सवाल नये ढंग से उठाए गए है।

इस उपन्यास में पौराणिक वातावरण का सजीव चित्रण हुआ हैं। इसकी भाषा सकल, सहज है जिससे पाठक वर्ग को भाषा समझने में कोई कठिनाई न हो, तत्सम षब्दों का प्रयोग किया गया है उपन्यास पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता की कोई पौराणिक कथा चल रही हो ऐसा लगता है आधुनिक काल की कोई घटना चल रही हो। इस प्रकार लेखक ने कठिन कार्य को सरल बना दिया है।

निष्कर्षः–पं. प्रभुदयाल मिश्र जी के उपन्यास 'मैत्रेयी' में स्त्री चेतना दिखाई देती है। लेखक ने कात्यायनी और मैत्रेयी दोनों स्त्री पात्रों का सजीव चित्रण किया है। आज हमारे लिए स्त्री षिक्षा बहुत बड़ा मुद्‌दा है लेकिन हजारों साल पहले मैत्रेयी ने अपने ज्ञान से न केवल स्त्री जाति का गौरव बढाया बल्कि उन्होने यह भी सच साबित कर दिखाया कि पत्नी धर्म का निर्वाह करते हुए भी स्त्री ज्ञान आर्जित कर सकती है। इस प्रकार दोनों स्त्रीं पात्रों में स्त्री चेतना दिखाई देती है।

संदर्भ–सूची:–

1. 'साहित्य सागर' पत्रिका सत्–साहित्यिक षोध–मासिकी, अगस्त 2012 संपादकः कमलकान्त सक्सेना भोपाल
2. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण) विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001(उपन्यास की भूमिका से) पृष्ठ सं. 1.
3. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 2
4. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 7
5. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 7
6. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 7
7. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 9
8. 'मैत्रेयी' उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 9
9. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 32
10. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 पृष्ठ सं. 33
11. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 (उ.प्र.) पृष्ठ सं. 35
12. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 (उ.प्र.) पृष्ठ सं. 36
13. मैत्रेयी उपन्यास (द्वितीय संस्करण)विष्वविद्यालय प्रकाषन चौक वाराणसी 221001 (उ.प्र.) पृष्ठ सं. 39